डॉ. अर्जुन चव्हाण
अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी),
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री विजया इराप्पा कांबळे ने मेरे निर्देशन में "भीष्म साहनी की नाट्य-चेतना की मीमांसा" लघु शोध-प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्वयोजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोधछात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधछात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर।
दिनांक : 30 जून, 1998

शोधनिर्देशक

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

Lecturer
Department of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur - 416004

प्रख्यापन

" भीष्म साहनी की नाट्य-चेतना की मीमांसा " प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इसके पूर्व शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि की लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर।

दिनाक : 30/6/98

शोधछात्रा

(सुश्री विजया इराप्पा कांबळे)

SHIVAJI UNIVERSITY
KOLHAPUR
LIBRARY

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि सुश्री विजया इराप्पा कांबळे का "भीष्म साहनी की नाट्य-चेतना की मीमांसा" लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

दिनांक : 30 JUN 1998

(डॉ.पी.एस्.पाटील)

अध्यक्ष,

हिंदी विभाग

शिवाजी विश्वविद्यालय,

कोल्हापुर - 416004

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय है - " भीष्म साहनी की नाट्य-चेतना की मीमांसा "। जब मैंने हिंदी साहित्य में सुविख्यात कथाकार भीष्म साहनी का नाटक "मुआवज़े " पढा तब मुझे महसूस हुआ कि इस नाटककार ने समसामायिक विषय पर अपनी पैनी नजर और सुझ-बुझ से लेखनी चलायी हैं । 'मुआवज़े' नाटक की विषयवस्तु, संवाद और प्रस्तुतीकरण की कला ने मुझे अपनी ओर खींचा। मैंने उनके और दो नाटक - 'हानूश' और 'माधवी' पढे। मैं प्रस्तुत रचनाओं से प्रभावित हुई। तत्पश्चात उनके ई.स. 1977 से 1996 तक प्रकाशित नाटकों का अध्ययन बारिकी से करने हेतु उपर्युक्त विषय चुन लिया। इस विषय का अध्ययन प्रारंभ करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खडे हुए थे -

1. भीष्म साहनी का जीवन कैसे बीता ?
2. भीष्म साहनी ने किस प्रकार के नाटक लिखे हैं ?
3. उनके नाटकों की मूल चेतना क्या है ?
4. सामाजिक चेतना उनके किन-किन नाटकों में प्राप्त होती है ?
5. क्या मानवतावादी चेतना उनके सभी नाटकों में प्राप्त होती है ?
6. भीष्म साहनी के नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसे है ?

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें उपसंहार में लिख दिया है। अध्ययन की सुविधा कि दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध -प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में भीष्म साहनी के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। इस अध्याय में उनके जन्म, माता-पिता-भाई, शिक्षा, नौकरी तथा व्यवसाय, विवाह,परिवार, मित्र, स्वभावगत विशेषताएँ आदि बातों का विवेचन किया है तथा साथ में उनके साहित्यिक कृतियों तथा प्राप्त सम्मानों के बारे में जानकारी दी है। अंत में अध्याय का निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय में भीष्म साहनी के सारे नाटकों का विवेचन प्रकाशन -क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है। नाटकों का विवेचन करते समय उनके हर नाटक का संक्षिप्त परिचय देकर अंत में नाटक के बारे

में निष्कर्ष दिए हैं । इसमें विवेच्य नाटक किस कोटि में आते हैं, नाटक के नायक-नायिका, प्रमुख पात्र आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत भीष्म साहनी के नाटकों में प्राप्त सामाजिक चेतना को उद्घाटित किया है। इसमें समाज का स्वरूप, अर्थ, परिभाषा, 'मीमांसा' तथा 'चेतना' शब्द के अर्थ देकर विवेच्य नाटकों में प्राप्त सामाजिक चेतना के अंतर्गत पारिवारिक संबंध, दोस्त-दोस्त संबंध, गुरू-शिष्य संबंध, राज-सत्ता की निरंकुशता, धर्म-सत्ता की दोहरी नीति,अर्थ-सत्ता की नीति, जाती-पाँति और छुआछूत प्रथा,विवाह प्रथा, सामान्य मनुष्य की विजय आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं ।

चतुर्थ अध्याय में भीष्म साहनी के नाटकों में व्याप्त मानवतावादी चेतना का विवेचन है । मानव तथा मानवता शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ देकर विवेच्य नाटकों में प्राप्त मानवतावादी चेतना के अंतर्गत दया,करूणा,परदु:खकातरता,परदु:खनिवारण तथा परोपकार की भावना, कर्तव्य,त्याग और निष्ठा, प्रेम की भावना, सत्संग और भण्डारे का आयोजन,हिन्दू-मुस्लिम धर्म का त्याग आदि पर प्रकाश डाला है । इसमें मानवतावाद की महत्ता को चित्रित करनेवाले नाटकों का साधार विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष को स्पष्ट किया है।

पंचम अध्याय में भीष्म साहनी के नाटक रंगमंचीयता के दृष्टी से कैसे है, इस बात पर प्रकाश डाला है। इसमें विवेच्य नाटकों में प्राप्त रंगनिर्देश, रंग-सज्जा, प्रकाश-योजना,ध्वनी-संकेत, गीत-संगीत-योजना, संवाद-योजना,अंक-योजना आदि बातों को स्पष्ट किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है।

लघु शोध-प्रबंध के अंत में उपसंहार दिया है । इसमें पूर्वविवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धतियों से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए गए हैं। उपसंहार के उपरांत परिशिष्ट और संदर्भ-ग्रंथ-सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानती हूँ।

मेरे गुरूवर्य आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाण,वरिष्ठ व्याख्याता, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। इस लघु शोध- प्रबंध के विषय-चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक आपका मार्गदर्शन मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। आपके पास से मैने अपनी हैसियत से जो कुछ पाया है उसीकी परिणति यह लघु शोध-प्रबंध है। भविष्य में भी आपके आशीर्वाद तथा ऋण में मैं रहना चाहती हूँ। मैं श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. चन्दूलाल दूबे जी, डॉ. वसन्त मोरे जी तथा डॉ. पी.एस.पाटील,अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर, की मैं ऋणी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ-ग्रथों की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर तथा राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथालयों से हुई। इसलिए शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर तथा राजाराम महाविद्यालय,कोल्हापुर के ग्रंथपाल और सभी कर्मचारीयों की मैं आभारी हूँ। स्वर्गीय पूज्य पिताजी इस लघु शोध-प्रबंध के लिए मेरी प्रेरणा बने रहे हैं। उनकी इच्छापूर्ति ही मेरे अध्ययन का लक्ष्य है। मैं अपने पिताजी के आशीर्वाद तथा स्नेह की अधिकारिणी हूँ इसलिए उनके न रहने पर भी प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का कार्य संपन्न हुआ है। इसलिए मैं अपने पिताजी के श्रीचरणों में नतमस्तक हूँ। पूज्य माताजी तथा बड़े भाई ईश्वर के आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर काम असंभव है। उनके प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी। श्री.अशोक बाचूळकर,श्री.उत्तम येवले, श्री.अरूण गंभीरे तथा मेरी सहपाठी सहेलियाँ सुश्री चित्रा पणशीकर और सुश्री शामला कोळेकर के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के कर्मचारी श्री.वसंत शामराव दिंडे जी की मैं आभारी हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप मे बाईंडिंग करनेवाले श्री. मिलींद पाटील की मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध -प्रबंध को विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर।

शोधछात्रा

Kolekar

दिनांक : 30/6/98

(सुश्री. विजया इराप्पा कांबळे)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय : " भीष्म साहनी: जीवन एवं साहित्य " 1 से 18 तक

1.1 भीष्म साहनी का जीवन परिचय

1.1.1 जन्म तथा जन्मस्थल

1.1.2 माता- पिता

1.1.3 बड़े भाई : बलराज साहनी

1.1.4 पारिवारिक वातावरण

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरियाँ तथा व्यवसाय

1.1.7 विवाह

1.1.8 संतान

1.1.9 मित्र परिवार

1.2 व्यक्तित्व

1.2.1 सादगी

1.2.2 विनम्रता

1.2.3 सहनशीलता

1.2.4 सेवाभावी

1.2.5 विशेष रूचियाँ

1.2.6 अपनी पत्नी के नजर में भीष्म साहनी

1.3 साहित्य सृजन

1.3.1 कहानी - संग्रह

1.3.2 उपन्यास

1.3.3 नाटक

SHIVAJI UN. LIBRARY KOLHAPUR

पृष्ठ संख्या।

1.3.4 जीवनी

1.3.5 निबंध संग्रह

1.3.6 बाल-साहित्य

1.3.7 संपादक भीष्म साहनी

1.3.8 अनुवादक भीष्म साहनी

1.4 **पुरस्कार एवं सम्मान**

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : " भीष्म साहनी के नाट्य-साहित्य का परिचय " 19 से 56 तक

2.1 'हानूश'

2.2 'कबिरा खड़ा बजार में '

2.3 'माधवी'

2.4 'मुआवज़े'

2.5 ' रंग दे बसन्ती चोला '

समन्वित निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : " भीष्म साहनी के नाटकों में सामाजिक चेतना की मीमांसा " 57 से 91 तक

3.1 'समाज' का अर्थ

3.2 'समाज' की परिभाषा

3.3 'समाज' का स्वरूप

3.4 'सामाजिक' का अर्थ

3.5 'चेतना ' का अर्थ

3.5.1 'दर्शन' के क्षेत्र में 'चेतना' का स्वरूप

3.5.2 'मनोविज्ञान' के क्षेत्र में 'चेतना' का स्वरूप

3.5.6 'सामाजिक चेतना' की परिभाषा और स्वरूप

पृष्ठ संख्या

3.5.7	'मीमांसा' का अर्थ
3.8	विवेच्य नाटकों में 'सामाजिक चेतना ' की मीमांसा
3.8 .1	पारिवारिक संबंध
3.8 .1	पति-पत्नी संबंध
3.8 .2	माँ -बेटी संबंध
3.8 .3	पिता -पुत्री संबंध
3.8.4	पिता-पुत्र संबंध
3.8.5	माता - पुत्र संबंध
3.8.6	भाई-भाई का संबंध
3.8.7	बहन-भाई का संबंध
3.8.8	बहनोई और साले का संबंध
3.8.2	दोस्त-दोस्त संबंध
3.8.3	गुरू-शिष्य संबंध
3.8.4	राज-सत्ता की निरंकुशता
3.8.5	अंग्रेजी शासन व्यवस्था का चित्रण
3.8.6	धर्म-सत्ता की दोहरी नीति पर प्रहार
3.8.7	अर्थ - सत्ता की नीति पर प्रहार
3.8.8	विवाह प्रथा का चित्रण
3.8.9	जाति व्यवस्था और छुआछूत की प्रथा
3.8.10	सामान्य कलाकार की विजय-घोषणा
	निष्कर्ष

पृष्ठ संख्या

चतुर्थ अध्याय : " भीष्म साहनी के नाटकों में मानवतावादी चेतना की मीमांसा " 92 से 108 तक

4.1 'मानव' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

4.2 'मानवता' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

4.3 विवेच्य नाटकों में मानवतावादी चेतना की मीमांसा

4.3.1 दया,करूणा, परदु:खकातरता,परदु:खनिवारण तथा परोपकार की भावना

4.3.2 कर्तव्य, त्याग और निष्ठा

4.3.3 प्रेम की भावना

4.3.4 जाति-पाँति का विरोध

4.3.5 हिंदू - मुस्लिम धर्म मे बाह्याडम्बरों का विरोध

4.3.6 हिंदू तथा मुस्लिम धर्म का त्याग

4.3.7 सत्संग और भण्डारे का आयोजन

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : " भीष्म साहनी के नाटकों में रंगमंचीय चेतना " 109 से 157 तक

5.1 रंगनिर्देश

5.1.1 रंगनिर्देश में त्रुटियाँ

5.2 रंग-सज्जा

5.2.1 रंग-सज्जा के प्रकार

5.2.2 चित्रांकित रंग-सज्जा

5.2.3 प्रकृतिवादी रंग-सज्जा

5.2.4 प्रतीक रंग-सज्जा

5.2.5 रंग-सज्जा में

5.2.6 रंग-सज्जा में स्थान निर्देश का पूर्ण अभाव

पृष्ठ संख्या

5.3 प्रकाश-योजना

5.3.1 बत्ती जलाना

5.3.2 अँधेरे और प्रकाश के साथ मशालों की रोशनी

5.3.3 समयानुसार प्रकाश - परिवर्तन

5.3.4 रोशनी बुझाकर दृश्य की समाप्ति

5.3.5 पुंजदीप प्रकाश-योजना

5.3.6 रंगीन प्रकाश-योजना

5.3.7 आग की लपटें और शोलों का प्रयोग

5.4 ध्वनि-संकेत

5.4.1 घड़ी की टिक्- टिक्

5.4.2 भागते कदमों की आवाज

5.4.3 आवाज़ें

5.4.4 तालियाँ

5.4.5 घड़ी की आवाज

5.4.6 दस्तक

5.4.7 घोड़ो की टापों की आवाज

5.4.8 सीढ़ियों पर कदमों की आवाज

5.4.9 पहियों की आवाज

5.4.10 मंदिरों की घण्टियों और अज़ान की आवाज

5.4.11 स्तोत्र और तोप चलने की आवाज

5.4.12 वेद मन्त्र, मन्त्रोचारण तथा स्वस्तिपाठ

5.4.13 चायदानी टूटने और गोली चलने की आवाज

5.4.14 नारों की आवाज

5.4.15	बेनाम व्यक्ति की आवाज	
5.4.16	भारतीय लोगों की आवाज	
5.4.17	ऊधमसिंह की आवाज	
5.4.18	कुत्तों और सियारों के भौंकने की आवाज	
5.4.19	विविध वाद्यों की आवाज	
5.4.20	आकाशवाणी	
5.4.21	टेलीफोन की आवाज	
5.4.22	लाउडस्पीकर की आवाज	
5.4.23	रिक्शा की घण्टी की आवाज	
5.5	**गीत-संगीत योजना**	
5.6	**संवाद -योजना**	
5.7	**अंक - योजना**	
	निष्कर्ष	
	उपसंहार	158 से 165 तक
	(अ) परिशिष्ट	166 से 171 तक
	(ब) परिशिष्ट	172 से 174 तक
	संदर्भ-ग्रंथ-सूची	175 से 179 तक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR